Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Level-II

हिंदी

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. वर्ण, स्वर व व्यंजन	1
2. संधि	13
3. उपसर्ग	40
4. प्रत्यय	51
5. समास	62
6. शब्द ज्ञान	78
7. संज्ञा	80
8. सर्वनाम	88
9. विशेषण	97
10.अव्यय/अविकारी शब्द	106
11.लिंग	110
12.वचन	117
13.वाक्य	122
14.काल	130
15.वाक्य रचना	141
16.क्रिया	148
17.वाक्य शुद्धिकरण	155
18. पाठ योजना	163
19.शिक्षण उद्देश्य	168
20. शिक्षण विधिया	171
21.चर्चा	190

22. मापन व मूल्याकंन 192

23. भाषा 199

Toppersnotes
Unleash the topper in you

o.k] Loj o 0;atu

⇒ उच्चरित रूप को ध्वनि कहते है।

⇒ उच्चरित रूप मे भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि होती है।

⇒ ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहते है लिखित रूप मे भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।

⇒ भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है।

⇒ जिस वर्ण के आगे कोई टुकडे नही होते है उन्हे अक्षर कहते है।

⇒ अक्षर चार होते है — अ, इ, उ, ऋ

Note दो या दो से अधिक सार्थक वर्णों के समुहो को शब्द कहते है।

⇒ शब्द दो प्रकार के होते है — (1) सार्थक (2) निरर्थक

⇒ निरर्थक — निः + अर्थक — विसर्ग सन्धि
⇒ निर + अर्थक — निरर्थक (संयोग)

चाय	वाय
खाना	वाना
पंखा	वखा

⇒ अर्थ की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई शब्द होती है।

⇒ दो या दो से अधिक सार्थक शब्दो के अर्थ समुहो को वाक्य कहते है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ भावो और विचारो की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई वाक्य है।

⇒ विद्वानो ने भाषा की पूर्ण परिपक्व इकाई वाक्य को कहा है।

1 ⇒ व्याकरण
2 ⇒ वैयाकरण – व्याकरण का ज्ञाता

सही शब्द ⇒ , प्रज्वल, प्रज्वलित, प्रोज्जवल

⇒ भाषा की सबसे बड़ी इकाई वाक्य को कहा जाता है।

⇒ कुल – योग पैर मे पुरा । (क्रम)
कुल – किनारा सिर मे आधा ।। (कर्म)

:– वर्ण :–

⇒ सर्वप्रथम 'अ' वर्ण की उत्पत्ती हुई।
⇒ सभी वर्णो की उत्पत्ति शिवजी के डमरू से हुई।
⇒ वर्णो को लिपी चिन्ह कहते है
⇒ वर्णो की संख्या हिन्दी 44 होती है, हिन्दी मे कुल वर्णो की संख्या 52 होती है।

⇒ स्वर :– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ
ओ, औ

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ वर्णो के भेद – वर्णों के दो भेद होते है :–
⇒ स्वर (11) (2) व्यंजन (33)

⇒ **स्वर** :– जिन वर्णों के उच्चारण मे स्वर तंत्रिकाओ मे कम्पन, घर्षण, और बल नही लगाया जाता है उन्हे स्वर कहते है।

⇒ स्वर स्वतंत्र होते है। वृत्ति – रचना
⇒ स्वरो के छ: भेद होते है। वृत्ती – विधान

(1) उच्चारण काल के आधार पर
(2) उच्चारण के आधार पर
(3) उत्पत्ति के आधार पर
(4) जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर
(5) ओष्ठाकृति के आधार पर
(6) मुखाकृति के आधार पर

1. उच्चारण काल के आधार पर स्वरो के भेद
⇓
⇓ स्वर (ह्रस्व स्वर) ⇓ गुरू स्वर (दीर्घ स्वर)

[अ, इ, उ, ऋ] [आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ]

सही शब्द ⇒ ह्रस्व, ह्दय – हृदय, ह्द – तालाब

1 ⇒ **लघु स्वर** :- जिन स्वरो के उच्चारण मे कम समय लगता है उन्हे लघु-स्वर कहते है।

⇒ लघु स्वरो की संख्या हिन्दी मे चार होती है :-
(अ, इ, उ, ऋ)

⇒ लघु स्वरो के अन्य नाम :-
(1) अक्षर स्वर
(2) ह्रस्व स्वर
(3) नैसर्गिक स्वर
(4) अखण्डित स्वर
(5) प्राकृतिक स्वर
(6) मूल स्वर
(7) एक मात्रा वाले स्वर

⇒ लघु शब्द का विलोम गुरू होता है
⇒ लघु + अ = लाघव ह्रस्व + अ = ह्रास्व
दीर्घ + अ = दीर्घ गुरू + अ = गौरव

2 **गुरू स्वर** ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे लघु स्वरो से दुगुना समय लगता है उन्हे गुरू स्वर कहते है।

⇒ हिन्दी मे गुरू स्वरो की संख्या सात है :-
(आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)

⇒ गुरू स्वरो के अन्य नाम ⇒
(1) दीर्घ स्वर
(2) दो मात्रा वाले स्वर
(3) संयुक्त स्वर

⇒ (4) खण्डित स्वर
(5) मिश्रित स्वर
(6) संधि स्वर

⇒ गुरु स्वरो के दो भेद :–
(1) समदीर्घ स्वर / सजातिय दीर्घ स्वर
(आ, ई, ऊ)
(2) विषम दीर्घ स्वर / विजातिय दीर्घ स्वर
[ए, ओ, ऐ, औ]

अ, आ, इ, ऋ

⇒ अ + अ = आ
इ + ई = ई
उ + उ = ऊ
— समजातिय दीर्घ स्वर

अ / आ + इ / ई = ए
अ / आ + उ / ऊ = ओ
अ / आ + ए = ऐ
अ / आ + ओ = औ
→ विषमजातिय दीर्घ स्वर

⇒ शब्दकोषीय क्रमानुसार स्वरो का सही क्रम
(ए, ऐ, ओ, औ)

⇒ पाणिनीय व्याकरणानुसार स्वरो का सही क्रम
(ए, ओ, ऐ औ)

⇒ शब्दकोषीय क्रमानुसार व्यंजनो का सही क्रम (य, र, ल, व)
⇒ पाणिनीय व्याकरणानुसार व्यंजनो का सही क्रम
(य, व, र, ल)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ उत्पत्ति के आधार पर स्वरो के भेद :-

मूल स्वर
अ, इ, उ, ऋ

संधि स्वर
आ, ई, , ए, ऐ, ओ, औ

आ, ई, ऊ ⇒ दीर्घ संधि स्वर
ए, ओ ⇒ गुण संधि स्वर
ऐ, औ ⇒ वृद्धि सन्धि स्वर

⇒ लम्बोष्ट — ऊँट, शाखामृग — बन्दर

⇒ जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर स्वरो के भेद

स्वरो के भेद

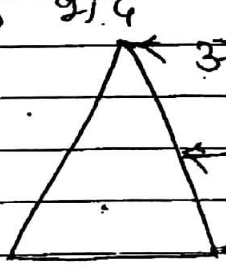

अग्र - इ, ई, ऋ, ए, ऐ
मध्य - अ → उदासीन स्वर
पश्च - आ, उ, ऊ, ओ, औ

1. अग्र स्वर ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे जिह्वा जिहवा का (आगे का) अग्र भाग सक्रीय होता है तो उन्हे अग्र स्वर कहते है - (इ, ई, ऋ, ए, ऐ)

2. मध्य स्वर ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे जिहवा का मध्य भाग

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ बीच का भाग सक्रीय होता है उन्हे मध्य स्वर कहते है। — (अ)

3 **पश्च स्वर :-** जिन स्वरो के उच्चारण मे जिह्वा का पीछे का भाग सक्रीय होते है उन्हे पश्च स्वर कहते है — आ, उ, ऊ, ओ, औ

4 **ओष्ठाकृति के आधार पर स्वरो के भेद**

दो भेद होते है — उ, ऊ, ओ, औ
(1) वृत्ताकार / वृत्तमुखी
(2) अवृत्ताकार / अवृत्तमुखी
अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

1. **वृत्ताकार** ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे ओष्ठो की आकृति गोल हो जाती है उन्हे वृत्तमुखी स्वर कहते है। — — उ, ऊ, ओ, औ,

2. **अवृत्ताकार** ⇒ जिन स्वरो के उच्चारण मे ओष्ठो की आकृति गोल नही होकर अन्य किसी भी आकृति मे हो जाती है उन्हे अवृत्तमुखी स्वर कहते है। — अ, आ, इ, ई, , ऋ ए ऐ

ओर — तरफ औार — अन्य
उपसर्ग विलोम अपसर्ग / पर सर्ग /

5 मुखाकृति के आधार पर :-

बन्द ← ⇒ संवृत – इ, ई, उ, ऊ
⇒ अर्द्ध संवृत – ए, ओ
⇒ विवृत – आ
खुला ← ⇒ अर्द्ध विवृत – अ, ऐ, औ

: व्यंजन :-

⇒ जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है उन्हे व्यंजन कहते है। इनके उच्चारण में स्वर तंत्रिकाओं में घर्षण होता है, कम्पन होता है और बल लगाया जाता है।

⇒ व्यंजनो को मुख्यत: तीन भागो मे बाँटा जाता है
<1> स्पर्श / अदंत ⇒ क से म तक पाँच वर्ग होते है – 25
<2> अन्त: स्थ ⇒ य, र, ल, व – 4
<3> ऊष्म ⇒ श, ष, स, ह – 4

⇒ <1> स्पर्श व्यंजन ⇒ जिन व्यंजनो के उच्चारण में स्वर तंत्रिकाओं में सामान्य रूप मे घर्षण या कंपन होता है उन्हे स्पर्श व्यंजन कहते है।
स्पर्श व्यंजनो की संख्या – 25 है
– (क से म तक)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ (2) अन्तस्थ व्यंजन ⇒ जिन व्यंजनो के उच्चारण मे सामान्य से भी कम स्वर तंत्रि कम्पन या घर्षण होता है उन्हे अन्तस्थ व्यंजन कहते है – 4 (य र ल व)

⇒ (3) ऊष्म का शाब्दिक अर्थ ⇒ गर्मी होता है जिन व्यंजनो के उच्चारण मे सबसे अधिक कंपन या घर्षण होता है उन्हे उष्म व्यंजन कहते है – 4 (श ष स ह)

⇒ (3) उच्चारण स्थान

1 ⇒ कण्ठ ⇒ अ आ क वर्ग (क, ख, ग, घ ङ.) ह इन सभी वर्णो का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

2 ⇒ तालु ⇒ इ, ई, च वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) य, श इन सभी वर्णो का उच्चारण स्थान तालु है।

3 ⇒ मूर्धा ⇒ ऋ ट वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) र ष इन सभी वर्णो का उच्चारण स्थान मूर्धा है।

4 ⇒ दन्त ⇒ त वर्ग (त, थ, द, ध, न) ल, स, इन सभी वर्णो का उच्चारण स्थान दन्त है। हिन्दी मे ल, स, न वत्सर्य (मसुडा)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ (5) ओष्ठ ⇒ उ, ऊ, प वर्ग (प, फ, ब, भ, म) इन सभी वर्णों का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

⇒ (6) नासिक और अपना-अपना वर्ग

⇒ ङ — कण्ठ नासिक
ञ — तालु नासिक
ण — मूर्धा नासिक
न — दन्त नासिक
म — ओष्ठ नासिक

इन वर्णों का उच्चारण स्थान नासिक और अपना-अपना वर्ग है।

⇒ कण्ठ तालु — ए, ऐ
⇒ कण्ठोष्ठ — ओ, औ
⇒ दन्तोष्ठ — व
⇒ नासिका — (ं) अनुस्वार

⇒ उच्चारण आधार पर व्यंजनो के भेद

1. ⇒ स्पर्शी → क ख ग घ ट ठ ड ढ त थ द ध प फ ब भ (16)
2. ⇒ संघर्षी स्पर्शी → च छ, ज झ — (4)
3. ⇒ संघर्षी → श ष स ह — (4)
4. ⇒ नासिक्य → ङ ञ ण न म — 5
5. ⇒ अति क्षिप्त → ड़ ढ़ — 2
6. ⇒ पार्श्विक → ल — 1
7. ⇒ प्रकम्पित → र — 1
0 ⇒

Toppersnotes
Unleash the topper in you

कम्पन के आधार पर व्यंजनो के भेद

विसर्ग (:) - अघोष (12)

अनुस्वार (ं)

घोष (23+5)

वर्ग –

क वर्ग	क ख	क - ग घ ङ
च वर्ग	च छ	च - ज झ ञ
ट वर्ग	ट ठ	ट - ड ढ ण
त वर्ग	त थ	त - द ध न
प वर्ग	प फ	प - ब भ म
	श ष स (13)	य र ल व ह (20)

⇒ श्वास वायु के आधार पर व्यंजनो के भेद

अनुस्वार (ं) → अल्पप्राण (135)

(:) विसर्ग → महाप्राण (54)

क वर्ग	क ग ङ	क - ख घ
च	च ज ञ	च - छ झ
ट	ट ड ण	ट - ठ ढ
त	त द न	त - थ ध
प	प ब म	प - फ भ
	य र ल व	श ष स ह
	19	14
स्वर	11	
	30	

Toppersnotes
Unleash the topper in you

स्वर = 11
व्यंजन – 33
संयुक्त व्यंजन – 4
अयोगवाह वर्ण – 2 (ङ, ढ़, ड़ अतिक्षिप्त
अक्षिप्त
अयोगवाह वर्ण – 2
↓
1 अनुस्वार (ं) 2 विसर्ग (ः)

संयुक्त व्यंजन – 4

1. क्ष – क् + ष = क्ष
2. त्र – त् + र – त्र
3. ज्ञ – ज् + ञ –
4. श्र – श् + र – श्र

⇒ कुल वर्णों की संख्या – 52
वर्णों की संख्या – 44

laf/k

⇒ संधि का शाब्दिक अर्थ :- मेल / जोड़ना
⇒ संधि का संधि विच्छेद - सम् + धि संजन
⇒ सन्धि शब्द का विलोम - विग्रह / विच्छेद
⇒ संधि शब्द को यास्कमुनि ने - संतान / सन्निधि कहा
⇒ संधि शब्द को पाणिनी ने संहिता कहा
⇒ संधि सदैव तत्सम और सार्थक शब्दों में ही होती है।

जैसे :- जगत् + ईश - जगदीश
फूल + तेल - फुलेल (इत्र)

सन्धि ⇒

⇒ दो या दो से अधिक वर्णों के मेल होने से वर्णों में विकार उत्पन्न होता है और नये सार्थक शब्द की रचना हो जाती है उन्हें सन्धि कहते हैं।

⇒ संधि विग्रह / विच्छेद शब्द संज्ञा - सर्वनाम प्रत्यय उपसर्ग अव्यय / सार्थक आदि कोई शेष रहना चाहिए।

⇒ संधि सदैव साम्य (समान) अर्थ में होती है। विरोधी अर्थों में संधि नहीं होती

(विश्व + नाथ)
⇒ विश्व + अनाथ - विश्वानाथ - विश्वनाथ
विश्व + अमित्र - विश्वामित्र - (विश्व + मित्र)
दीन + अनाथ - दीनानाथ - (दीन + नाथ)
षट् + अंग - षडंग

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ संधि मे सदैव वर्णों मे विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होना चाहिए तो सान्धि होती है। यदि वर्णों मे विकार उत्पन्न नही होता है तो सान्धि नही होकर वह संयोग कहलाता है।

⇒ संयोग
- अन + उचित = अनुचित
- निर + अर्थक – निरर्थक
- सम + उचित – समुचित

⇒ संधि के चार स्थान

⇒ सान्धि – सम + धि
- रमा + ईश – रमेश
- जगत + ईश – जगदीश

⇒ समास – कृष्ण + अर्जुन – कृष्णार्जुन
- शीत + उष्ण – शीतोष्ण

⇒ उपसर्ग – उत + ज्वल – उज्ज्वल
- सम + उत + ज्वल – समुज्ज्वल

⇒ प्रत्यय – मनु + अ – मानव
- दनु + अ – दानव
- लघु + अ – लाघव

सन्धि का नियम + पहले और + बाद लगता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सन्धि का नियम :-

सन्धि का नियम → सन्धि का नियम सदैव प्रथम पद का अन्तिम वर्ण और अन्तिम पद के प्रथम वर्ण में लगता है तो वह प्रधान या मुख्य संधि कहलाती है। यदि इनके अलावा अन्य जगह कोई नियम लगता है तो उसे गौण सन्धि या अप्रधान सन्धि कहते हैं।

जैसे :

जगदीश - जगत् + ईश व्यंजन।
रामायण - राम + अयन -

⇒ सन्धि के चार स्थान :-

सन्धि	समास	उपसर्ग	प्रत्यय
	कृष्णार्जुन	उत् + ज्वल	मनु + अ = मानव
सम + धि	कृष्ण + अर्जुन	उज्ज्वल	
रमा + ईश	शीतोष्ण	सम + उत् + ज्वल	
जगत + ईश	शीत + उष्ण	समुज्ज्वल	दनु + अ = दानव
			लघु + अ = लाघव
			वि + अव + हार + इक = व्यावहारिक

⇒ सन्धि के चार महत्वपूर्ण कार्य :-

1. एकादेश -

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 आदेश
3 वर्णागम
4 वर्णलोप

1 **एकादेश** ⇒ रमा + ईश = रमेश
जहां दो वर्णों के स्थान पर एक वर्ण बना है तो वह एकादेश वाली संधि कहलाती है।
दीर्घ, गुण, वृद्धि — शत्रुवत
— महा + इन्द्र = महेन्द्र

2 **आदेश** ⇒ एक वर्ण के स्थान पर कोई वर्ण परिवर्तन होता है तो आदेश वाली कहते हैं।
यथा, अयादि — शत्रुवत ~~मित्रवत~~ सान्धि
— सु + आगत — स्वागत

3 **वर्णागम** ⇒ बिच में नये वर्ण का आना ही वर्णागम कहलाता है
मित्रवत सान्धि है। — अनु + छेद = अनुच्छेद
— मातृ + छाया =

4 **वर्णलोप** ⇒ इसमे अन्तिम वर्ण का लोप हो जाता है।
पक्षिन + राज = पक्षिराज
प्राणिन् + नाथ = प्राणिनाथ
पतन + अंजलि = पतंजलि

के पहले वाले का लोप